

BH-5916

M.A. (Ist Semester) Examination, 2022

HINDI

Paper - V

(Sant Kavi Kabirdas)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 70

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दें।

खण्ड - अ

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का है।

Q. 1. (अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : **5×1=5**

- (i) सधुक्कड़ी कवि की काव्यभाषा है।
- (ii) राम नाम के देबे कौ कुछ नाहि।
- (iii) भगति भजन नाँव है दूजा दुख अपार।
- (iv) कबीरदास की पुत्री का नाम था।
- (v) कबीरदास के गुरु का नाम है।

(ब) सही विकल्प का चयन कीजिए। **5×1=5**

- (vi) सद्गुरु ने शिष्य को कौन सी वस्तु नहीं दी :
 - (अ) दीपक
 - (ब) बाती

(2)

(स) तेल

(द) राख

(vii) सुमिरण क्या है :

(अ) जाल

(ब) जंजाल

(स) सार

(द) काल

(viii) कबीरदास जी के पुत्र का नाम था :

(अ) कमाल

(ब) जमाल

(स) रसाल

(द) कृपाल

(ix) कबीरदास जी का जन्म स्थान है :

(अ) नयनतारा

(ब) यमतारा

(स) लहरतारा

(द) रमतारा

(x) परचा कौ अंग में किसका उल्लेख किया गया है :

(अ) गुरु का

(ब) शिष्य का

(स) निर्गुण ब्रह्म का

(द) सगुण ब्रह्म का

(3)

खण्ड - ब

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न) (25-30 शब्दों में)

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है। $5 \times 2 = 10$

- Q. 2. (i) ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों का उल्लेख कीजिए।
(ii) 'सतगुरु सवान का सगा' इस पंक्ति का क्या आशय है ?
(iii) "बासुरि सुख न रैणि सुख" यह पंक्ति कबीरदास जी ने किस संदर्भ में कही है ?
(iv) कबीर के ब्रह्म का स्वरूप कैसा है ?
(v) बाह्याडंबरों के संबंध में कबीरदास जी ने क्या कहा है ?
(vi) गुरु के द्वारा शिष्य के हृदय में ज्ञान की अग्नि लगा दिये जाने का क्या परिणाम होता है ?

खण्ड - स

(लघु उत्तरीय प्रश्न) (250 शब्दों में)

नोट : किन्हीं पाँच के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंकों का है। $5 \times 4 = 20$

- Q. 3. (i) "हिन्दू-मुस्लिम पाखंड पर कबीरदास जी की सम्यक् दृष्टि थी।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
(ii) जगत के संबंध में कबीरदास जी के विचारों का उल्लेख कीजिए।
(iii) 'निहकर्मो पतिव्रता कौ अंग' शीर्षक साखियों का भावार्थ लिखिए।
(iv) 'सूरा तन कौ अंग' शीर्षक साखियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(4)

- (v) कबीरदास के रहस्यवाद की विशेषताएँ लिखिए।
(vi) निम्नलिखित साखियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :
बिरहनि ऊभी पंथ सिरि, पंथी बूझै धाई।
एक सबद कहि पीव का, कब रे मिलेंगे आई।।
बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नहीं विश्राम।।
बिरहिन उठै भुईं पड़े, दरसन कारनि राम।
मूवाँ पीछे देहुगे, सो दरसन किहि काम।।

खण्ड - द

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) (500 शब्द से अधिक)

नोट : किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है। $3 \times 10 = 30$

- Q. 4. (i) संत कवि कबीरदास के दार्शनिक विचारों का उल्लेख कीजिए।
(ii) संतकाव्य धारा में कबीरदास का स्थान निरूपित कीजिए।
(iii) संत कवि कबीरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का सविस्तार उल्लेख कीजिए।
(iv) कबीरदास जी पढ़े-लिखे नहीं थे लेकिन उनके पास अनुभव-जन्य ज्ञान था, जिसने उन्हें महान कवि बना दिया"- इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

